❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
# आर्य सन्देश



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र


विश्वदेवो महाँ असि।
- सामवेद 1026

हे विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe ! You are the Greatest of all.


वर्ष 42, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 सितम्बर, 2019 से रविवार 22 सितम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh


## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलाधिपति का अभिनन्दन एवं स्वागत समारोह सम्पन्न

### वैदिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र होगा-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय- डॉ.सत्यपाल सिंह, कुलाधिपति

### पुण्यभूमि को भी बनाएंगे शिक्षा एवं आस्था का दिव्य केन्द्र - पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

**तीनों सभाओं की एक साथ गुरुकुल कांगड़ी की जिम्मेदारियों में भागीदारी एक सुखद भविष्य का संकेत** - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक सभा

**सुयोग्य एवं पुरुषार्थी हैं - गुरुकुल कांगड़ी विवि. के कुलाधिपति** - डॉ. योगानन्द शास्त्री

**अज्ञान-अविद्या का दूर होगा अंधेरा गुरुकुल कांगड़ी के प्रताप से** - धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली सभा

**गुरुकुल कांगड़ी नई उंचाइयों को पुनः प्राप्त करेगा** - सुदर्शन शर्मा, प्रधान पंजाब सभा

**कुलाधिपति के नेतृत्व में वैदिक मूल्यों का होगा-प्रचार** - मा.रामपाल आर्य, प्रधान हरियाणा सभा

**शिक्षा सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज रहा है - सदैव अग्रणी** - विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

### किसी सभा विशेष का नहीं, गुरुकुल पूरे आर्यसमाज का : तीनों सभाओं पर है इसके संचालन एवं संरक्षण की जिम्मेदारी

आर्य समाज की उन्नति, प्रगति और सफलता के आधार स्तंभ के रूप में विश्व विख्यात अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी की प्रमुख तपस्थली गुरुकुल कांगड़ी समस्त आर्यजनों की प्रेरणा का केंद्र है। 6 सितंबर 2019 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रांगण में नव नियुक्त कुलाधिपति के रूप में पधारे लोकसभा सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह का अभिनंदन एवं स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का शुभारंभ माता लालदेवी यज्ञशाला में यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान डॉ. सत्यपाल सिंह, श्रीमती अलका सिंह, श्री पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, श्री सुरेश चन्द आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. सुदर्शन शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मास्टर रामपाल, प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा उपस्थित रहे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में नवनियुक्त कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह के सम्मान समारोह में पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए अपने संदेश में कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना पुण्यभूमि में हुई थी। इस

*- जारी पृष्ठ 4 एवं 7 पर*

कुलाधिपति अभिनन्दन समारोह के अवसर पर आशीर्वाद देते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, सम्बोधन देते कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी। शुभकामनाएं देते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं हरियाणा सभा के प्रधान मा. रामपाल जी

### महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ:150वें वर्ष के अवसर पर स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

## वाराणसी में कार्यकर्त्ताओं की विशाल बैठक : आर्यजनों में उत्साह की लहर

**अभूतपूर्व होगा वाराणसी में वैदिक धर्म महासम्मेलन** - सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अनुभवों का लाभ उठाएं** -धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

### स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद देकर किया उत्साहवर्धन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी एवं महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में "स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन" 11 से 13 अक्तूबर 2019 रामनाथ चौधरी शोध संस्थान, सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी में 13-14 सितम्बर, 2019 को श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री ज्ञानेंद्र गांधी, उपप्रधान व स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी, महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, एवं श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सतीश चड्डा, महामंत्री व श्री सुरिन्द्र चौधरी, व्यवस्था सचिव, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली, श्री दिनेश आर्य, उपप्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, श्री प्रमोद आर्य, मंत्री, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी एवं श्री राजकुमार वर्मा, मंत्री, महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास वाराणसी, आचार्य डॉ. प्रीति विर्माशिनी जी और विभिन्न स्थानीय आर्य समाजों व सभाओं के अधिकारियों व

*- जारी पृष्ठ 8 पर*

**वेद-स्वाध्याय**

# इन्द्र के वज्र वाग्देवी की महती महिमा

**इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।**
**ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।।** -अथर्व० 19/9/3
ऋषिः-**वसिष्ठः।।** देवता-**शान्तिः।।** छन्द-**अनुष्टुप्।।**

**शब्दार्थ** - **इयम्** = यह **या** = जो **परमेष्ठिनी** = परमदेव परमेश्वर में ठहरनेवाली और **ब्रह्मसंशिता** = ज्ञान से तीक्ष्ण की गई **वाक्** = वाणीरूपी **देवी** = देवता है, **यया एव** = जिससे कि निःसन्देह **घोरम्** = बड़े-बड़े घोर कृत्य **ससृजे** = किये जाते हैं **तया एव** = उसी वाणी से **नः** = हमारे लिए, हम मनुष्यों के लिए **शान्तिः** = शान्ति **अस्तु** = होवे, फैले।

**विनय** - हमारे अन्दर जो वाणी है वह एक बहुत बड़ी देवता है। हमारा दुर्भाग्य है कि हम इसके माहात्म्य को नहीं समझते। यह तो परमेष्ठिनी है-परम में ठहरनेवाली है। इसका स्थान परमदेव में है, पर हम इसे तुच्छ-सी समझते हुए इसके साथ 'परमेश्वर से सम्बन्ध रखनेवाली वाग् देवता' का-सा बर्त्ताव नहीं करते। यदि हम इसके साथ ऐसा ही बर्त्ताव करें और इसे ब्रह्मसंशिता बनाएँ तो इसके समान संसार में और कोई दूसरी शक्ति नहीं है। ब्रह्म से, ईश्वरीय ज्ञान से, ब्रह्मचर्य-प्राप्त ब्रह्मतेज से संशित की गई, तीक्ष्ण की गई वाणी एक ऐसा शस्त्र है, जो अमोघ है। यह इन्द्र का वज्र है। यह आत्मा की एकमात्र शक्ति है। अनादिकाल से संसार के सब दिव्य लोग इसी दिव्य हथियार को बरतते आये हैं। यह ठीक है कि जैसे प्रत्येक हथियार का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों किये जा सकते हैं वैसे इस वाक् का दुरुपयोग भी हो सकता है और सदा होता रहा है। इससे बड़े-बड़े घोर कृत्य किये गये हैं। संसार में जो लड़ाई-झगड़े, उपद्रव और संग्राम होते रहते हैं प्रायः उन सबका मूल किसी-न-किसी रूप में वाणी का दुरुपयोग ही होता है। वाणी की तलवार के घाव कितने बुरे होते हैं और कितने भयंकर दुष्परिणाम के लानेवाले होते हैं, यह सभी अनुभवी लोग जानते और देखते हैं, परन्तु हम कभी वाणी का दुरुपयोग नहीं करेंगे। अपनी वाणी का सदा शक्ति फैलान के लिए, प्रेम व मेल बढ़ाने के लिए उपयोग करेंगे। इस देवी का, परमेश्वर की प्रदान की हुई इस परम पवित्र वस्तु का, हम बहुत सोच-समझकर उपयोग करेंगे। इसके द्वारा हम जख्मों को भरेंगे, फटे हुओं को मिलाएँगे और पृथक् हुओं को गले लगवाएँगे। हमारा संकल्प है कि इस वाणीशक्ति द्वारा हम संसार में शान्ति फैलाएँगे, संसार में शान्ति का संस्थापन करेंगे।

**-: साभार :-**
**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

**सम्पादकीय**

# गणेश का नहीं, अंधविश्वास का हो विसर्जन

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी देशभर में गणेश उत्सव को पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। लेकिन 11 दिन तक चले गणेश उत्सव का जैसे ही समापन दिवस आया तो सुबह-सुबह टीवी पर पंडित बैठे थे जो बता रहे थे कि गणेश विसर्जन का शुभ मुहूर्त व विधि पंचक,राहुकाल व भद्रा समय में बिदाई कैसे करें। कोई बता रहा था कि सुबह जल्दी उठकर नहाएं और मिट्टी से बनी भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा की पूजा का करें, माला चढ़ायें और विसर्जित करें। कोई गणेशजी को चंदन, अक्षत, मोली, अबीर, गुलाल, सिंदूर, इत्र, जनेऊ आदि चढ़ाकर विसर्जित करने का ज्ञान दे रहे थे।

इसी शुभ मुहूर्त के चक्कर में इस दौरान दिल्ली, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में गणेश उत्सव के दौरान लोगों की मौत हुई है। अलग-अलग जगहों पर हुए हादसे में तकरीबन 40 लोगो की जान चली गई। यह सभी हादसे गणेश विसर्जन के दौरान हुए। राजधानी दिल्ली में ही चार छात्र जिनमें दो लड़के और दो लड़कियों की पानी में डूबने से मौत हो गई। इसके अलावा भोपाल में गणेश विसर्जन के दौरान नाव पलटने से 11 लोगों की मौत हो गई थी। गणेश विसर्जन के दौरान जो लोग डूबे हैं उसमें अधिकतर लोगों की उम्र 20 वर्ष के आसपास थी। वे सब के सब नौजवान थे जिनकी आंखों में आने वाली जिंदगी को लेकर तरह तरह के सपने थे कि बड़ा होकर यह करूंगा, वह करूंगा, यह बनूंगा, वह बनूंगा लेकिन अब उन सभी का दाह संस्कार हो गया है और पीछे रह गए हैं तो रोते बिलखते मां-बाप और परिजन जो किस्मत और उस घड़ी को कोस रहे हैं कि क्यों उन्होंने अपने घर के लाड़ले चिरागों को गणेश विसर्जन में जाने दिया।

हालाँकि देश में ऐसे हादसे होना कोई नई घटना नहीं है। प्रतिवर्ष विसर्जन के दौरान डूबने के हादसे होते रहे हैं लेकिन कोई भी इन हादसों से सबक लेने की कोशिश नहीं करता। क्योंकि दुनिया में चाहे कोई भी इन्सान हो, यह मानने को तैयार नहीं है कि वह अंधविश्वासी है। जैसे कोई अपशब्दों से दुखी या गुस्सा हो जाता है वैसे ही ही किसी को अंधविश्वासी कहने से भी वह गुस्सा हो जाता है। जबकि यह सभी मानने को तैयार हैं कि अंधविश्वास एवं धार्मिक पाखण्ड हमारी तरक्की में बहुत बड़ी बाधा हैं और इसके कारण प्रतिवर्ष न जाने कितने लोग अपनी जान गँवा रहे हैं।

ताजा भोपाल में हुए इस हादसे पर कई लोगों ने सवाल खड़े किये है कि मूर्ति विसर्जित करने गये ये लोग इस उम्मीद के साथ गए थे कि बप्पा मोरिया उनकी मुराद पूरी करेगा क्या इन नौनिहालों की मुराद मरने की थी अगर नहीं तो उन्हें बप्पा मोरिया ने बचाया क्यों नहीं? सवाल जायज है और ऐसे अंधविश्वास पर ऐसे सवाल खड़े करके ही अनेकों मिशनरी भारत के पिछड़े इलाकों में सफल होती रही हैं। क्योंकि लोगों को मूर्ति और पाखंड थमा देने वालों को कभी यह नहीं बताया कि गणों के स्वामी गणपति कोई खिलौना या मनोरंजन की चीज नहीं कि दस ग्यारह दिन उसके सामने नाच गाना किया और फिर उसे किसी नदी नाले में बहा दिया जाये।

वैदिक गणेश पुस्तक में श्री मदन रहेजा ने बहुत ही अच्छे ढंग से गणपति की उपासना को बताते हुए लिखा है कि गणपति हमारे पूजनीय इष्ट देवता हैं उनका आदर सम्मान करना सीखें। सही पूजा अर्चना करना सीखें उनके वैदिक, वैज्ञानिक आध्यात्मिक स्वरूप को समझने का प्रयास करें। गणपति कोई हाथी सूंड वाला नहीं है। वेदों में गणपति शब्द अनेकों बार आया है जिसका अर्थ है गणों का स्वामी अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में जितनी भी वस्तुएं विद्मान है जिनकी गणना हो सकें उन सबके स्वामी को गणपति अर्थात् परम पिता परमात्मा कहा गया है।

कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पहले गणपति की पूजा करनी चाहिए यह बात सही है क्योंकि गणपति परमपिता परमात्मा को कहा गया है। इस कारण हमें

**.....प्रतिमा एक प्रतीक हैं हम किसी तस्वीर शिल्प कला के विरोधी नहीं क्योंकि प्रतिमा हमारी धरोहर है किन्तु यदि उनसे किसी प्रकार का अंधविश्वास फैले तो समस्या उत्पन्न होती है। धार्मिक अंधविश्वास तो फैलता ही है साथ में पर्यावरण को भी हानि होती है जैसे आज भी किसी न किसी तरह से लोग नदी में मूर्तियों को फेंकना सब से पुण्य का काम मानते हैं। हालाँकि अब कई जगह पुल के करीब कूड़ादान भी रखा जाने लगा है पर इसमें मूर्तियां कोई नहीं डालता। लोगों को इस बात का डर बैठाया गया है कि कूड़ेदान में मूर्तियां डालने से उन का अहित होगा। आस्था की आड़ में हम अपनी नदियों को प्रदूषित कर आते हैं। .....**

ईश्वर को याद जरुर करना चाहिए लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आप एक मूर्ति रखकर दस दिन ढोल नगाड़े बजाये, फिल्मी गीतों की धुन पर नृत्य करें और ग्यारहवें दिन उस मूर्ति को विसर्जित करें।

प्रतिमा एक प्रतीक है। हम किसी तस्वीर शिल्प कला के विरोधी नहीं क्योंकि प्रतिमा हमारी धरोहर है किन्तु यदि उनसे किसी प्रकार का अंधविश्वास फैले तो समस्या उत्पन्न होती है। धार्मिक अंधविश्वास तो फैलता ही है साथ में पर्यावरण को भी हानि होती है जैसे आज भी किसी न किसी तरह से लोग नदी में मूर्तियों को फेंकना सब से पुण्य का काम मानते हैं। हालाँकि अब कई जगह पुल के करीब कूड़ादान भी रखा जाने लगा है पर इसमें मूर्तियां कोई नहीं डालता। लोगों को इस बात का डर बैठाया गया है कि कूड़ेदान में मूर्तियां डालने से उन का अहित होगा। आस्था की आड़ में हम अपनी नदियों को प्रदूषित कर आते हैं।

क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि हमारी आस्था भी जीवित रहे और साथ में प्रकृति को भी हानि न हो। क्योंकि भारतीय संस्कृति में नदी को मां का दर्जा दिया गया है लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि हम जिसे मां कहकर सम्मान देते हैं उसे हमने इस कदर गंदा कर दिया गया है कि उसके पानी को पीने की आचमन करने की बात तो कोसों दूर गयी। सामने जो हालात दिख रहे हैं उससे ऐसा लग रहा है कि नदियों में गंदगी हमारे लिए एक बड़ी मुसीबत बनकर हमारे आसपास मंडराने लगी है। जिसके लिए सबसे आगे नदियों के घाट पर बने पूजा स्थलों के पुजारियों के साथ छोटे-बड़े असंख्य मंदिरों के महंत, महामंडलेश्वर,पंडितों को पहल करनी होगी। धर्म को रोजगार की बजाय आचरण का विषय मानकर बताना होगा कि जल है तो कल है जब तक ये नदियाँ है तब तक हम जीवित हैं। क्यों न हम ऐसा कार्य करें कि हमें अपने हृदय से कभी गणपति अर्थात् उस ईश्वर की कभी विदाई न करनी पड़े। इससे हमारे जल स्रोत भी निर्मल रहेंगे और विसर्जन के नाम पर हो रही असमय मौतें भी रुक जाएंगी। क्यों न हम एक जागरूकता का अभियान चलायें कि अगले अगले वर्ष हम गणेश जी का नहीं इस नाम पर फैल रहे अंधविश्वास का विसर्जन करें।

***- सम्पादक***

**इंग्लैंड के आर्च बिशप का जलियांवाला बाग जाकर माफी मांगने का मामला**

# उड़ता नहीं, बंटता पंजाब भी देखो!

पंजाब में बढ़ते नशे पर पिछले दिनों एक फिल्म आई थी 'उड़ता पंजाब' जिसमें पंजाब के युवाओं को नशे में लिप्त दिखाया गया था। लेकिन हाल ही पंजाब में जो कुछ अंदरखाने चल रहा है उसे देखकर लगता है जल्द ही एक फिल्म बंटता पंजाब भी बना देनी चाहिए। इन दिनों इंग्लैड के सभी चर्चों के प्रमुख केंटबरी के आर्कबिशप जस्टिन बेल्बी भारत भ्रमण पर हैं और इस यात्रा के दौरान वे पंजाब के अमृतसर भी गये। यहाँ पहुंचकर जस्टिन वेल्बी अमृतसर में जलियांवाला बाग स्मारक पर जाकर दंडवत मुद्रा में लेट गए और उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार के लिए माफी मांगते हुए कहा कि यहां जो अपराध हुआ, उससे मैं शर्मसार और दुखी हूं। एक धार्मिक नेता के तौर पर मैं इस त्रासदी पर शोक व्यक्त करता हूं।

आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी की यह तस्वीर देश विदेश के कई प्रतिष्ठित अखबारों में भी छपी। सभी जानते हैं कि देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में सामूहिक नरसंहार का नाम आते ही हमारे सामने जलियांवाला बाग कांड का चित्र उभर कर सामने आता है जिसमें करीब 400 लोग ब्रिटिश सरकार की गोलियों का शिकार हुए थे। वहां की दीवारों पर आज भी लगे गोलियों के निशान हम भारतीयों के दर्द को ताजा कर देते हैं।

यह दुखद घटना साल 1919 में हुई थी इस घटना के अब सौ वर्ष पूरे होने पर इस वर्ष ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री टेरीजा मे ने ब्रिटिश संसद में जलियांवाला बाग हत्याकांड पर अफसोस जताया। संसद में संवेदना भी जताई थी, लेकिन माफी मांगने से इनकार कर दिया था। इसलिए अब जस्टिन बेल्बी का पंजाब पहुंचकर माफी मांगना संदेहास्पद है। आखिर क्यों जिस घटना के लिए इंग्लैंड सरकार माफी मांगने को तैयार नहीं है उसके लिए उनके धर्मगुरु क्यों माफी मांग रहे है? कहीं इसका सिर्फ यही एक कारण तो नहीं कि ईसाई धर्मांतरण की फसल लिए आज इन लोगों को पंजाब की जमीन इन लोगों को उपजाऊ लग रही है?

**..... दिन पर दिन बढ़ती चंगाई सभाओं के आयोजन देखकर लग रहा है जैसे नागालैंड के बाद पंजाब दूसरा राज्य है जिसे यीशु के प्रोजेक्ट की सबसे उन्नत चारागाह के रूप में चिह्नित किया गया है। वरना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासन ने अपने सैनिकों और अपने लोगों के लिए चावल की जमाखोरी कर ली थी जिसकी वजह से 1943 में बंगाल में आए सूखे में तीस लाख से अधिक बंगाली लोग मारे गए थे उसके लिए तो आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी ने माफी नहीं मांगी। केवल पंजाब पहुंचकर ही आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी का दिल क्यों पसीजा?.....**

इसमें कोई दो राय नहीं है कि अब पंजाब में ईसाई धर्मांतरण का खेल खुलेआम हो रहा है। बड़े शहरों से लेकर दूर-दराज के गांवों तक में चंगाई सभा जैसे आयोजनों की भरमार हो गई है। धर्मांतरण का शिकार सिखों और हिंदुओं को बनाया जा रहा है। जबकि मुस्लिम बहुल इलाकों में ईसाई संगठनों की गतिविधियां न के बराबर हैं। ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों को लेकर सोशल मीडिया पर लिखने वालों की पोस्ट पर नजर डालें तो पंजाब में धर्मांतरण के सारे खेल के पीछे लालच का भी बड़ा हाथ है। कई लोगों ने बताया है कि गरीब लोगों को मुफ्त इलाज, नौकरी और पैसे का लालच देकर ईसाई एजेंसियां अपने चंगुल में फंसा रही हैं। कई ऐसे मामले भी सामने आए हैं, जब मां-बाप तो सिख बने रहे, लेकिन उनका कोई एक लड़का लालच में पड़कर ईसाई बन गया। ईसाई मिशनरियां नौकरी की तलाश कर रहे बेरोजगार नौजवानों को विदेश भेजने का झांसा देकर उन्हें ईसाई बना रही हैं।

क्योंकि पिछले कुछ सालों में ढेरों नए चर्च खुल गए हैं और जगह-जगह बाइबिल और ईसाई धर्मांतरण साहित्य बांटते लोगों को देखा जा सकता है। कुछ चर्च तो ऐसी जगहों पर खुले हैं जहां 5-5 किलोमीटर के दायरे में एक भी ईसाई नहीं रहता। जिस तरह से ईसाई मिशनरियों की सक्रियता बढ़ी है उसे देखते हुए यही लगता है कि इन्हें विदेशों से बड़ी रकम और सहयोग मिल रहा है। कई ईसाई धर्म प्रचारक तो बाकायदा सिखों की तरह पगड़ी भी बांधते हैं। सिखों और पंजाबियों की तरह के नाम वाले ये प्रचारक भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाने में जुटे हैं। अनपढ़ और गांवों के लोगों के बीच जाकर ईसाई मिशनरी वाले लोगों को बताते हैं कि उनकी सारी मुसीबतों के पीछे असली कारण उनकी धार्मिक परंपराएं, उनके गुरु, त्यौहार और देवी-देवता हैं। इसके लिए लोगों को तरह-तरह के लालच भी दिए जाते हैं। ज्यादातर लोगों को यह एहसास भी नहीं होने दिया जाता कि उन्हें धर्मांतरण की तरफ ले जाया जा रहा है। कभी बीमारी के इलाज के नाम पर तो कभी नौकरी-रोजगार के नाम पर लोगों को ईसाई मिशनरियों से जोड़ने का काम जोरशोर से चल रहा है।

दिन पर दिन बढती चंगाई सभाओं के आयोजन देखकर लग रहा है जैसे नागालैंड के बाद पंजाब दूसरा राज्य है जिसे यीशु के प्रोजेक्ट की सबसे उन्नत चारागाह के रूप में चिह्नित किया गया है। वरना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश शासन ने अपने सैनिकों और अपने लोगों के लिए चावल की जमाखोरी कर ली थी जिसकी वजह से 1943 में बंगाल में आए सूखे में तीस लाख से अधिक बंगाली लोग मारे गए थे उसके लिए तो आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी ने माफी नहीं मांगी। केवल पंजाब पहुंचकर ही आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी का दिल क्यों पसीजा?

वजह साफ है वास्तव में पंजाब भारत की मुकुटमणि है। इस पंजाब को दुनिया ने भारत और आर्यों के सबसे गौरवशाली सभ्यता के विकसित होने का मूल निवास कहा। इसी पंजाब में सिन्धु घाटी सभ्यता विकसित हुई थी। यही पंजाब भारत भूमि पर आक्रमण करने आने वालों के आगे ढाल बनकर हमेशा खड़ा रहता था। जब पूरा का पूरा समाज विधर्मी छाया से संतप्त था। पंजाब से ही सिख पंथ की भक्ति-धारा उठी थी जिसने मतांतरण के प्रवाह को लगभग रोक दिया था। यही पंजाब है जहाँ वेदों में वर्णित सर्वाधिक नदियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। पंजाब वही है जहाँ गुरू गोविंद सिंह जी ने भारत-भूमि और धर्म की रक्षा के लिये खालसा सजाई थी। इसी पंजाब से गुरु गोविंद सिंह जी ने श्री राम जन्मस्थान के रक्षा का संकल्प लिया था। इसी पंजाब से गोरक्षा के लिए रामसिंह कूका और उनके भक्तों ने गर्दनें कटवाई थीं। इसी पंजाब से बंदा सिंह बैरागी और हरिसिंह नलवा ने हमारे पूर्वजों की रक्षा के लिये तलवारे उठाई थीं।

इतने आक्रमणों और विभाजनों को झेलने के बाबजूद भी आज जो संपन्न और सबसे जिंदादिल लोग पंजाब के हैं तो क्यों न उसे ही शिकार बनाया जाये। इसी वजह से आर्चबिशप जस्टिन बेल्बी जलियावाला में दंडवत लेटे हुए हैं। परन्तु यह याद रखने योग्य बात है कि भारत में जहाँ-जहाँ ईसाई धर्म प्रचार सफल हुआ है, वहाँ-वहाँ पृथकतावादी आंदोलन खड़े होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर अपने मन में खोजना होगा। अभी पंजाब और वहाँ के लोग इस संकट से बेखबर हैं। जबकि चंगाई सभाओं के नाम पर पास्टर धर्मांतरण की इस फसल को बेखौफ सींच रहे हैं।

**- राजीव चौधरी**

**प्रेरक प्रसंग**

## सामाजिक क्रान्ति कैसे आई?

कुछ लोग क्रान्ति का शोर तो बहुत मचाते हैं परन्तु कर कुछ भी नहीं पाते, परन्तु ऐसे भी धीर-वीर देखने में आते हैं जो कहते नहीं करके दिखा देते हैं। आज भी बहुत विरले युवक हैं जो विधुर होने पर किसी विधवा से विवाह करने को सहर्ष उद्यत हों। सन् 1914 ई. में तो यह कार्य और भी कठिन था। उत्तरप्रदेश में तब एक आर्यवीर ने एक विधवा से विवाह करके सारे उत्तरप्रदेश के पौराणिकों, विशेषरूप से कायस्थों में खलबली मचा दी। पण्डित श्री गंगाप्रसादजी उपाध्याय ने अपनी माताजी व अपनी पत्नी श्रीमती कलादेवीजी को बड़ी सूझबूझ से इस बात के लिए तैयार कर लिया कि उपाध्यायजी के अनुज का एक बाल विधवा से विवाह किया जाए। विवाह की बात गुप्त रखी गई।

विचित्र बात तो इस विवाह में यह थी कि कन्या के माता-पिता को तैयार करने के लिए भी बड़ा परिश्रम करना पड़ा। तीस युवक बारात में गये। विवाह हो गया। पौराणिकों ने इसका कड़ा विरोध किया। सनातनी लोगों ने अपना रामबाग छोड़ा। उपाध्यायजी को बिरादरी से बहिष्कृत करने का प्रस्ताव पारित कर दिया गया।

पौराणिकों ने एक बहुत बड़ी सभा बुलाई। इतनी बड़ी सभा गंगाप्रसादजी की बिरादरी ने न कभी देखी थी न सुनी थी। मुरादाबाद के पण्डित ज्वालाप्रसाद तथा आर्यसमाज के विरोधी कई नामी पण्डितों को आर्यसमाज के विरोध के लिए इस सभा में बुलाया गया। आर्यसमाज ने कविरत्न पण्डित अखिलानन्द तथा देशभक्त पण्डित इन्द्रवर्माजी शास्त्रार्थमहारथी को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया। अखिलानन्द तब तक वैदिक धर्मी ही था। आर्यों ने शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दे दी। उक्त सभा एटा में बुलाई गई थी।

उपाध्यायजी तो सभा में उपस्थित न थे परन्तु इनके हितैषियों ने इसमें सोत्साह भाग लिया। उपाध्यायजी के अनुज की एटा में क्या सारे उत्तरप्रदेश के पोंगापंथियों में धूम मची हुई थी। सभा के प्रधान एक राजा साहब राव महाराजसिंह मनोनीत किये गये। राजा साहब नियत समय पर न पहुँच सके। आर्यवीरों ने एक अचूक निशाना लगाया। एक युवक उठा और कहा, 'जब तक राजा साहब नहीं आते तब तक श्री अमूल्यत्नजी प्रभाकर इस सभा के प्रधान बनाये जाएँ।' तुरन्त ही एक दूसरे युवक ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। एकदम श्रीयुत अमूल्यरत्नजी ने सभापति का आसन ग्रहण कर लिया।

इसके तुरन्त पश्चात् एक और युवक ने यह प्रस्ताव रख दिया कि कुलश्रेष्ठ कायस्थों की यह सभा सर्वसम्मति से यह निश्चय करती है कि श्री सत्यव्रतजी ने एक बालविधवा से विवाह करके वीरतापूर्ण कार्य किया है। उनको बधाई दी जाती है। यह सारा कार्य आठ-दस मिनटों में समाप्त हो गया। लोग घरों को जाने लगे और सभा के संचालकों में खलबली मच गई। अब क्या किया जाए? कुछ लोग राजा महोदय के पास गये। कुछ एक ने पुलिस से सहायता माँगी। पुलिस इसमें करे भी तो क्या?

***- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

***साभार :***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*** **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

पुण्यभूमि को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विकसित किया जाएगा। इसे दर्शनीय और ऐतिहासिक बनाने के लिए एक विश्व स्तरीय पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए यथासम्भव सहयोग किया जायेगा।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की प्रायोजक संस्थाओं के पदाधिकारी भी उपस्थित रहें। अभिनंदन एवं स्वागत समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक संन्यासी की तपस्थली है। यहाँ पर कार्य करने का अवसर मिलना एक सौभाग्य की बात है। गुरुकुल का एक वैभवशाली इतिहास रहा है। आजादी की लड़ाई में गुरुकुल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल की स्थापना वैदिक शिक्षा दर्शन को सम्पूर्ण विश्व में प्राण प्रतिष्ठित करने के लिए हुई थी। वैदिक चिन्तन की महत्ता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विश्व में शान्ति केवल वेदों के माध्यम से स्थापित की जा सकती है। वेदों का लक्ष्य जाति, धर्म, लिग, क्षेत्र से इतर सम्पूर्ण मानवता का कल्याण करना है। सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने विश्वविद्यालय के भविष्य को लेकर अपनी योजनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय विश्व में वैदिक शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करे ऐसा उनका प्रयास रहेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विकास में संसाधनों की कमी को कभी आड़े नही आने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि देश के अन्य विश्वविद्यालय केवल डिग्री देने का काम करते है मगर गुरुकुल जीवन को रूपांतरित करने का कार्य करता है। वेदों के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि वह यह सपना देखते हैं कि एकदिन राज्य और केंद्र का मंत्रिमंडल एवं प्रमुख वेद हाथ में लेकर शपथ ग्रहण करें। इससे पूर्व कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने कुलपति कार्यालय परिसर में स्थापित किए गए ध्वज स्थल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस मौके पर उनके साथ विश्वविद्यालय के पदाधिकारियो व आर्य सभाओं के पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी।

अभिनंदन एवं स्वागत समारोह में दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानंद शास्त्री ने सम्बोधित करते हुए कहा कि डॉ. सत्यपाल सिंह जैसे प्रभावी, पुरुषार्थी और कर्मठ व्यक्ति का विश्व विद्यालय का कुलाधिपति होना विश्व विद्यालय की एक ताकत है। उन्होंने विश्वविद्यालय की समस्त फैकल्टी समन्वय और सहयोग से विश्वविद्यालय हित में कार्य करने के लिए तत्पर रहने के लिए कहा। उन्होंने कहा तभी विश्व विद्यालय समग्र रूप से विकास कार्य कर सकेगा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। विश्वविद्यालय उत्तरोत्तर वेद एवं आधुनिक विषयों के क्षेत्र में नूतन कीर्तिमान स्थापित करेगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के नव नियुक्त कुलाधिपति को बधाई देते हुए कहा कि डॉ. सत्यपाल सिंह एक योग्य कर्मठ एवं यशस्वी कुलाधिपति साबित होंगे ऐसा उन्हें पूर्ण विश्वास है।

गुरुकुल के पूर्व कुलाधिपति एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुदर्शन शर्मा ने स्वागत समारोह में कहा कि आज का दिन गुरुकुल के इतिहास में

– जारी पृष्ठ 7 पर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी के अभिनन्दन एवं स्वागत समारोह के अवसर पर उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते कुलपति डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी।

कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी को स्नेहिल आशीर्वाद देते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी।

स्वागत एवं अभिनन्दन समारोह के अवसर पर शुभकामनाएं देते पंजाब सभा के मन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, हरियाणा सभा के मन्त्री श्री उमेद शर्मा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं डॉ. योगानन्द शास्त्री जी।

कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी की शुभकामनाएं देते सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, पंजाब सभा, हरियाणा सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अधिकारीगण। इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों का जन समूह। समारोह की विडियो रिकार्डिंग दिल्ली सभा के अन्तर्गत महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर द्वारा की गई।

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
# आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

# स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

**दिनांक** 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

*आश्विन शु० 13-14-15 विक्रमी सं० 2076*

**कार्यक्रम स्थल** **रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वाटिका**
**सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी**

* समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
* इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करें। सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
* आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
* सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
* आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।
* ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर सम्पर्क करें- आवास (नि:शुल्क) अखिलेश आर्य 9451119659 (स:शुल्क) रविप्रकाश आर्य 9415389341

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन में सहयोग हेतु आप अपनी दान राशि निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा कराते ही श्री मनोज नेगी (9540040388) अथवा श्री अरुण सैनी (8527557756) को सूचित अवश्य करें ताकि आपको तत्काल रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

**'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'**
खाता सं. 09481000000276 IFSC Code : PSIB0020948
पंजाब एंड सिंध बैंक, कालकाजी, नई दिल्ली

यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

**निवेदक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

**पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी** स्वागताध्यक्ष
**आर्य ज्ञानेन्द्र गांधी** संयोजक
**सतीश चड्डा** व्यवस्था संयोजक

स्थानीय संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

**-: विशेष सूचना :-**

**जो श्रद्धालु महानुभाव वैदिक धर्म महासम्मेलन वाराणसी में भाग लेने के लिए हवाई जहाज, रेल अथवा सड़क यातायात के माध्यम से पहुंच रहे हैं वे आवास व्यवस्था हेतु अपनी सूचना 9540086759 पर व्हाट्सएप्प करें अथवा sammelanvaranasi@gmail.com ईमेल करें।**

1. आने वाले व्यक्तियों की संख्या : .....
2. ग्रुप लीडर का नाम : .....
3. ग्रुप लीडर का फोन नं. : .....
   (एक अतिरिक्त नं. भी दें) : .....
4. कहाँ से आ रहे है : .....
5. वाराणसी पहुंचने की तिथि : .....
6. वाराणसी किस स्टेशन पर पहुचेंगे : .....
7. ट्रेन का पहुचने का समय : .....
8. वापसी की तिथि : .....
9. वापसी का समय और स्टेशन : .....

यदि आप ग्रुप में न आकर व्यक्तिगत आ रहे है, तब भी यह सूचना व्यक्तिगत रूप में भेजे। यह सूचना अगर पहले ही दे दी गयी है तो दोबारा न भेजें। कृपया उपरोक्त सूचना भेजकर सहयोग करें, हम आपको बेहतर और आरामदायक सुविधा देने के लिए प्रयासरत हैं। - ***सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक***

# Source of Happiness

**- Dharmpal Arya**

Faces of Happiness and Sorrow Six long months of suffering. Wealth. Wife. Lovable children. All the ingredients of happiness are there. But still the body suf-fers. Neither food nor liquid goes down the throat. No matter which way he turns on his bed the excruciating pains never leave. A doctor comes daily. He gives injections and medicines. But, alas, all in vain. Only God can help now. Only God. Oh, what a life this is.

Slavery. Utter slavery. Fourteen hours of grinding toil. No rest. No relief. The master's wrath, abuse and insults to be en-dured all day. All because a hungry stomach has to be fed. How long must this wretched life be lived? An old father. An old mother. A wife and two children. No employment. How will they be clothed? From where will the money to buy their food come? Who is going to pay the rent? Who will help? At whose door must I beg? Who will share my worries? Personal worries. Domestic worries. Worrying thoughts of the future. Alas, it is better to die than live this life of fearsome worries.

I gave her happiness. I fulfilled all her desires. I left my parents and family for her. I became crazy and my eyes could see nothing but her beautiful form. But she left me. Eloped with another. Oh, what treachery! What shall I do? I cannot live without her.

No. No. Who says this? Listen. Look there. A little child walking on unsteady feet. Hands outstretched. Silvery laughter in his throat. Joy in his eyes. Rose in his cheeks. Fun on his lips. His mother comes and picks him up. A shower of kisses. She presses him to her bosom and says:

"There is none so happy as 1./ 1 Twenty-first birthday party. Laughter, mirth and pranks with friends. Delicious ice creams. Mouth-watering sweets and chocolates.Sentimental music. Lilting songs. Entertaining dances. What fu n! What joy! A garland around his neck. A thunderous applause and ova-tion. Name and photograph in newspapers. Wealth and fame.

Authority and power. A ministerial post in the State. What else is there to attain? Life has been a great success. It is full of joy. The cool, refreshing breeze of sprirg is blowing. The sweet fragrance of flowers is in the air. The moon shines in splendour. Four eyes become one. Lovers embrace. No more palpitation. Two hearts have become one. All individuality lost. Oh, this happiness! This sweet pleasure!

Joy. Happiness. Everywhere only joy and happiness. Life is one of happiness. Enjoy. Partake of the pleasure of life.

And also: The drinking party gathers. Tot after tot goes down the throat. Intoxication comes. Inebriation sets in. The body begins to sway drunkenly. What fun! What does the monk know about the pleasures ot life. What does he know about the joys of alcohol.

Look at the inebriate standing drunkenly. He has lost all sense of what is good and bad. Without shame. Without modesty. Money wasted. Health gone. Life ruined. How foolish is this man, thinks the monk. These are the faces of happiness and sorrow. On some there is only sorrow. On others there is only happiness. Happiness of some is sorrow of others, Sorrow of some is happiness of others. What is happiness? What is sorrow? Let us try to answer these questions.

**Inclination for Happiness**

Every individual shuns pain and misery. He is always in search of happiness. Whatever he does, it is accompanied by the desire to obtain happiness. Happiness is the impulsive force behind all his activities. A sage has expressed this in the Chan- dogya Upanishad (7-12-22) in the following way:

*Yadci vai subham labhate atha karoti, na asukham labdhuxi karoti*

(where a man hopes to find happiness he exerts himself to gain it; where he thinks his hopes will be dashed he makes no effort). Where is this happiness? What we wish to grasp as happiness, it is not its shadow? The more we go after it, the more it evades us. Will we ever realise it? We are not sure. There is the story of a donkey which wanted to eat a carrot. The carrot hung in front of the animal from a stick tied to its body. No matter how fast or how slow the animal went the carrot was always a little beyond the reach of its mouth.

Is not the happiness that we are seeking eluding us similarly? To be able to give a positive reply to this question we must first find out what in reality is happiness and what is suffering. An Indian folk song, in one of its verses, says: "Man finds happiness firstly when he enjoys good health; secondly when he is blessed with a son; thirdly when his hunger has been properly satisfied and fourthly when he has a lovable wife." There is truth in this. If a person does not enjoy sound health he cannot get enjoyment out of anything. Wealth, riches, motor car, appetising food, entertainment in the form of dances and art appeal most when one enjoys sound health. Even a healthy person becomes old. Then he desires to have a son who will be his support. It is also important that everyone be free from hunger. How can he derive happiness on an empty stomach? Man is not a lover of loneliness. He needs a companion. Who else can be a better companion than an affectionate wife? Sup- porting this point of view, Hegel, a German philospher, said: "If a person finds a job which he enjoys and a wife whom he can love, then his life will be a successful one." Not with standing the above we must search for the source of happiness.

**- President,**
**Delhi Arya Pratinidhi Sabha**

## आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा चलाए जा रहे आदिवासी क्षेत्रों में C.B.S.E. पैटर्न के विद्यालयों के कुशल संचालन एवं प्रबंधन के लिए निम्न पदों हेतु आवेदन आमंत्रित हैं:-

**प्रधानाचार्य, विद्यालय प्रबंधक, मुख्याध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी, हॉस्टल प्रबंधक, योग अध्यापक, धर्म शिक्षक।**

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक तथा विद्यालय प्रशासन से सेवा निवृत्त कार्यकर्ता भी आवेदन कर सकते हैं। सेवाभाव तथा राष्ट्र उत्थान कार्य में इच्छुक व्यक्ति अवश्य संपर्क करें। पति-पत्नी दोनों कार्य करना चाहे तो प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपना आवेदन विस्तृत बायोडाटा सहित cbse.daps @gmail.com ईमेल करें।

*- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

## आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

**वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

*- सम्पादक*

## महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत
## देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु
# प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

*- संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

## आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 27 सितंबर 2019 प्रात: 10 बजे से लेकर 2:30 बजे तक तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में आर्यरत्न ठाकुर विक्रम सिंह के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणावानंद सरस्वती जी होंगे। संयोजक डॉ. धर्मेंद्र कुमार और देवेश कुमार जी होंगे। इस अवसर पर कई प्रमुख वक्ताओं के उद्बोधन होने सुनिश्चित हैं। आप सब सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। - ***संयोजक***

## वार्षिक उत्सव का आयोजन

25 सितंबर से 29 सितंबर 2019 तक आर्य समाज वेद मंदिर सी.पी. ब्लॉक मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा द्वारा वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें महिला सम्मेलन, यज्ञ, भजन, श्री भानुप्रताप जी द्वारा तथा प्रवचन डॉ. सोमदेव जी शास्त्री के होंगे। समापन समारोह 29 सितंबर को प्रात: 7:30 बजे से 1 बजे तक होगा।- ***सोहनलाल आर्य, मन्त्री***

## निर्वाचन समाचार

### रामगली आर्यसमाज हरिनगर

**घंटाघर, नई दिल्ली-110064**

प्रधान : श्रीमती वेद कुमारी
मन्त्री : श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चन्द्र मल्होत्रा

### आर्यसमाज सी.पी. ब्लाक

**मौर्य एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034**

प्रधान : श्री ब्रतपाल भगत
मन्त्री : श्री सोहनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राकेश ठुकराल

## घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***


## वैदिक शगुन लिफाफे

**महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में**

| सिक्के वाले | बिना सिक्के |
|---|---|
| मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | मात्र 300/-रु. सैंकड़ा |

**प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें**
**वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339**


**साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक**

## ऋग्वेद शतकम् महायज्ञ

आर्य समाज रेलवे रोड शकूरबस्ती द्वारा वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में 27 से 29 सितंबर 2019 तक ऋग्वेद शतकम् महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा और प्रवचनकर्त्ता श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी होंगे। 27, 28 सितंबर को प्रात: 7 से 8:30 बजे तक यज्ञ, सायं 7:30 से 8 बजे तक भजन और 8 बजे से 9:15 तक प्रवचनों का आयोजन होगा। 29 सितंबर को यज्ञ की पूर्णाहुति एवं समापन समारोह का आयोजन प्रात: 7:30 बजे से 1:30 बजे तक संपन्न होगा। - ***मन्त्री***

## श्रावणी पर्व एवं राष्ट्रीय पर्व संपन्न

आर्यसमाज मंदिर इंद्रपुरी द्वारा 13 अगस्त 2019 को श्रावणी पर्व एवं तीज पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सुश्री प्रगति आर्या के ब्रह्मत्व में यज्ञ, हवन किया गया। ध्वजारोहण श्रीमती सरोज नंदा महिला समाज की प्रधाना ने किया और सभी बहनों ने मिलकर ध्वज गीत गाया। इसके उपरांत सभी महिलाओं ने झुले का आनन्द उठाया। 15 अगस्त को राष्ट्रीय पर्व मनाते हुए 8 बजे आर्यवीर दल के बच्चों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। इस अवसर पर श्री चंद्र प्रकाश गौड़ भी उपस्थित थे। राष्ट्र ध्वज को नमन करते हुए सुश्री इंदिरा बहन जी व श्री रघुनाथ शास्त्री जी ने आजादी के विषय में बच्चों को संदेश दिया। समाज के प्रधान श्री नरेश वर्मा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। - ***मन्त्री***

## आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा दिल्ली में संचालित 'सहयोग' योजना के लिए ड्राइवर की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव अपना बायोडाटा aryasabha@yahoo.com ईमेल करें अथवा 9650183339 पर सम्पर्क करें।

- ***जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री***

## आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 4 का शेष

एक ऐतिहासिक दिन है क्योंकि आज हरियाणा, पंजाब और दिल्ली तीनों आर्य प्रतिनिधि सभा एक साथ मंच पर विद्यमान है। उन्होंने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि कुलाधिपति विवि को नई ऊँचाई पर लेकर जाएंगे।

अभिनंदन एवं स्वागत समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि हमें अतीत की गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ना है। अब संगठन के स्तर पर आर्य समाज एकजुट है जिससे नि:संदेह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समुचित विकास में सहयोग मिलेगा। उन्होंने आर्य समाज के शिक्षा के क्षेत्र में योगदान की चर्चा की। अभिनंदन एवं स्वागत समारोह को दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने सम्बोधित किया तथा नवनियुक्त कुलाधिपति को बधाई दी। कुलाधिपति के योग्य नेतृत्व में वैदिक मूल्यों की स्थापना हो तथा सम्पूर्ण विश्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का यश फैले ऐसी कामना प्रकट की।

समारोह में कुलसचिव प्रो. पी.सी जोशी ने गुरुकुल के प्रगति सोपान को पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रदर्शित किया जिसमें गुरुकुल की विकास यात्रा को दिखाया गया। प्रो. सोमदेव शतांशु द्वारा कुलाधिपति को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त अभिनन्दन पत्र का वाचन किया गया। समारोह में प्रो. अम्बुज शर्मा के निर्देशन में छात्र-छात्राओं द्वारा एक मोहक एवं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के अंत में कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने अभिनंदन एवं स्वागत समारोह में पधारे समस्त अतिथियों का आभार प्रकट किया। अपने धन्यवाद ज्ञापन में उन्होंने कहा कि गुरुकुल के विकास के लिए वे सबको साथ लेकर आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि विश्व-विद्यालय को योग्यतम एवं कर्मठ कुलाधिपति मिले हैं उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय अकादमिक जगत में नवीन कीर्तिमान स्थापित करेगा।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. एम.आर. वर्मा ने किया। कार्यक्रम के दौरान प्रो. सी.पी.खोखर, प्रो. श्रवण कुमार शर्मा, प्रो. एस.के.श्रीवास्तव, प्रो. राकेश शर्मा, प्रो. ईश्वर भारद्वाज, प्रो सोहनपाल सिंह आर्य, प्रो. आर.सी. दुबे, प्रो. डी.के. माहेश्वरी, प्रो. नवनीत, प्रो. डी.एस. मलिक, पूर्व विधायक अम्बरीश, विधायक आदेश चौहान, डॉ. संजय पालीवाल, प्रदीप चौधरी, डॉ. अजीत तोमर, डॉ. उधम सिंह, डॉ. विपुल भट्ट, डॉ. अजय मलिक, प्रो. प्रभात कुमार, प्रो. एल.पी. पुरोहित, प्रो. नमिता जोशी, प्रो. सुचित्रा मलिक, प्रो. श्यामलता जुयाल, डॉ. निपुर, डॉ. विपिन शर्मा, प्रो. आर.के.एस. डागर, डॉ. आर. के. शुक्ला, संयुक्त कुलसचिव देवेन्द्र कुमार, कुलभूषण, डा. पंकज कौशिक, प्रमोद, दीपक वर्मा, बिजेन्द्र सिह, दीपक आनन्द, शशिकान्त शर्मा, सेठपाल, कुलदीप, सत्यदेव आदि उपस्थित रहे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के समक्ष एक वेद भवन की आधारशिला कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने रखी। उन्होंने कहा कि यह वेद भवन भारत के उन वेद भवनों में से एक होगा जिसमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ वैदिक विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में नूतन अनुसंधान कार्य किया जायेगा। स्वामी दयानन्द जी ने कहा था चलों वेदों की ओर, स्वामी श्रद्धानन्द महाराज दयानन्द जी उस यात्रा को पूर्ण करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। उस यात्रा को अब वेद भवन के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा। कुलाधिपति ने दयानन्द स्टेडियम, फुटबाल ग्राउण्ड, संस्कृत भवन, संग्रहालय, पुस्तकालय का भ्रमण किया। इसके साथ ही शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारियों से अलग-अलग भेंट वार्ता की। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलाधिपति के सम्मान समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन दर्शन पर एक गीत का प्रस्तुतीकरण किया गया। कन्या गुरुकुल परिसर की छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गयीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संयोजन एवं निर्देशन प्रो. अम्बुज कुमार शर्मा ने किया

- ***डॉ. पंकज कौशिक, जनसम्पर्क अधिकारी***

**महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर**
**स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन**
**11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु**

## वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

**निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 सितम्बर, 2019 से रविवार 22 सितम्बर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19-20 सितम्बर, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 सितम्बर, 2019


प्रथम पृष्ठ का शेष

कार्यकर्त्ताओं की बहुपयोगी बैठक का आयोजन रामनाथ चौधरी शोध संस्थान, सम्मेलन स्थल पर हुआ। विभिन्न व्यवस्थाओं की विस्तार से चर्चाएं हुईं। बहुत सारी शंकाओं का निवारण तथा समाधान किया गया। दूर-दूर से आए हुए आर्यजनों में उत्साह था कि बहुत समय उपरान्त बहुत बड़ा आयोजन होगा और हम अपना योगदान देकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को नमन कर सकेंगे।

विभिन्न व्यवस्थाओं जैसे कि पंडाल व्यवस्था, विद्वानों को आमंत्रित करने की व्यवस्था, यज्ञ व्यवस्था, आवास व्यवस्था, सफाई व्यवस्था, धन एकत्रीकरण व्यवस्था, बाजार व्यवस्था, मुख्य मंच व्यवस्था, मुख्य पंडाल में बैठने की व्यवस्था, शौचालय व जल व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, फोटो व वीडियो कवरेज व्यवस्था, आर्य वीर दल की भूमिका, शास्त्रार्थ करवाने की व्यवस्था, आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन की व्यवस्था, बिजली व साउंड व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, दर्शनीय स्थल देखने की व्यवस्था, विद्वानों के रहने आदि की व्यवस्था तथा अन्य कई व्यवस्थाओं पर विचार विमर्श हुआ तथा उपरोक्त व्यवस्थाओं हेतु समितियों का गठन किया गया और उस के अध्यक्ष, संयोजक, व सदस्य कार्यकर्त्ताओं का चयन किया गया ताकि सभी व्यवस्थाएं निश्चित समय पर व्यवस्थित हो सकें और कार्यकर्त्ता अपना उत्तरदायित्व निभाते हुए उसको ढंग से निर्वहन करवा सकें। सार्वदेशिक, दिल्ली, उत्तर प्रदेश सभाओं व स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारी चर्चाओं के बाद संतुष्ट थे तथा इस कार्य में अपना पूरा योगदान तन मन धन से देने के लिए प्रयासरत रहेंगे ऐसा सभी ने विश्वास व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती जी, श्री ज्ञानेंद्र गांधी जी, सतीश चड्डा, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्री बलदेव सचदेवा जी, श्री सुरेंद्र चौधरी जी, श्री प्रमोद आर्य जी तथा श्री दिनेश आर्य जी ने विभिन्न वेंडरों से उपरोक्त कार्यों को पूर्ण करने हेतु बातचीत की तथा कुछ वेंडरों को कार्य आरंभ करने हेतु निर्देश दिया व अग्रिम सहयोग राशि प्रदान की। उनको इस आयोजन हेतु विशेष योगदान और आहुति देने के लिए भी प्रेरित किया। रामनाथ चौधरी शोध संस्थान के मालिक श्री शशि जी तथा अग्रवाल लानस के परिवारिक सदस्य श्री अजय जी ने अपना पूरा योगदान देने हेतु आश्वासन दिया। दोनों परिवारों के सदस्य इस कार्यक्रम में यजमान भी बनेंगे क्योंकि सभी महर्षि देव दयानंद सरस्वती जी के प्रति श्रद्धावान हैं और उनके द्वारा किए गए कार्यों से प्रभावित भी हैं।

श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल जी ने कहा कि आप जुट जाओ और हमें इस सम्मेलन को पूर्ण सफल बनाना है। आपको मैं पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं। श्री धर्मपाल आर्य जी ने अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम की पूरी टीम व उनके अनुभव का यहां पर वास्तविक इस्तेमाल हो सके, इसके लिए दिल्ली से सभी अधिकारी, मुख्य कार्यकर्ता व संयोजक उपस्थित हैं। पहले भी दो बार आ चुके हैं और आगे भी आएंगे और इस कार्यक्रम को सफल करने का पूरा प्रयास करेंगे। दिल्ली से आए हुए सभी सदस्यों ने कार्यकर्त्ताओं तथा व्यवस्था समितियों के संयोजकों तथा स्थानीय आर्य जनों से निवेदन किया कि यह कार्यक्रम हम सब का है, तन मन धन से न केवल सहयोग देंगे बल्कि दिन रात एक कर इस कार्यक्रम को सफल करेंगे। हम आपके हर कार्य में पूर्ण अनुभव, सहयोग व सहायता करने के लिए तत्पर हैं लेकिन आप अपने मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर अपने अपने उत्तरदायित्व व महर्षि के प्रति श्रद्धा भाव से अपनी खोई पहचान को पुनः प्राप्त करने के लिए पूरी ताकत से कार्यरत हो जाओ। बड़े ही आशा-उत्साह के वातावरण में बैठक संपन्न हुई। - ***सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक***

*प्रतिष्ठा में,*

## पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी होंगे 'प्रथम विश्व आर्यरत्न' सम्मान से सम्मानित

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, ओल्ड कैंपस के पास, मोहन पुरा पुलिया के आगे रातानाड़ा, जोधपुर में 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2019 तक ऋषि स्मृति सम्मेलन का भव्य एवं विराट स्तर पर आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों, भजनोपदेशकों और संन्यासियों के उपदेश होंगे। कार्यक्रम में (राष्ट्रीय वेद गोष्ठी) का आयोजन किया जा रहा है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और स्मृतिभवन न्यास की ओर से आर्यरत्न उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। - ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह